प्रख्यापन

" भवानीप्रसाद मिश्र की काव्यकला: एक अनुशीलन"

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल. के लघु शोध-प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही हूँ। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई।

Gharge S.V.

साखारवाडी.

सविता वामनराव घारगे

दिनांक 12/4/93

अनुसंधाता.

प्रा. डॉ. राजेंद्र शहा
एम. ए. एम.फिल. पी. एच. डी.
प्राध्यापक हिंदी विभाग,
मुधोजी महाविद्यालय,
फलटण, जि. सातारा (महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं प्रा. डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण, यह प्रमाणित करता हूँ कि सविता वामनराव घारगे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिये प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "भवानीप्रसाद मिश्र की काव्य-कला: एक अनुशीलन' मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलता पूर्वक पूरा किया है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय।

निर्देशक

(प्रा. डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा)

भूमिका

हिंदी भाषा के प्रति मेरा बचपन से ही लगाव था। बी.ए. तथा एम.ए. का अध्ययन करते समय मैंने बहुत से आधुनिक लोकप्रिय कवियों की रचनाओं का अध्ययन किया था। श्री. भवानीप्रसाद मिश्र की 'गीत फ़रोश' कविताने आकर्षित किया। अतः एम.फिल के लघुशोध प्रबंध का विषय चयन के बारे में आदरणीय डॉ. सुर्वेजी ने सामने विभिन्न कवियों के नाम सुझाये तो मैंने श्री. भवानीप्रसाद मिश्रजी को चुना। मेरे निर्देशक प्रा. डॉ. राजेंद्र शाहने, 'भवानीप्रसाद मिश्र की काव्य-कला: एक अनुशीलन' शीर्षक निश्चित किया ।

श्री. भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य का विश्लेषण मैंने सात अध्यायों में विभाजित किया हैं। पहले अध्याय "भवानीप्रसाद मिश्रः जीवनवृत्त, शिक्षा, उनके सामाजिक कार्य तथा उनके कृतित्व की चर्चा की जायेगी। दूसरे अध्याय "भवानीप्रसाद मिश्र की काव्य साधनाः सामान्य परिचय" में उनके विभिन्न काव्य संग्रहों की चर्चा की जायेगी। तीसरे अध्याय "भवानीप्रसाद मिश्र का काव्यः वैयक्तिक अनुभूति की तलाश" में मानवतावाद, सामाजिक विषमता, व्यंग्य, प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण, आत्म विश्लेषण, कवि की आत्माभिव्यक्ति आदि की चर्चा की जायेगी। चौथे अध्याय " भवानीप्रसाद मिश्र का काव्यः सामाजिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य" में सामाजिक वैषम्य, भारतीय समाज पारिवारिक संबंध, समाज में समता लाने का प्रयास आदि की चर्चा की जायेगी। पाँचवे अध्याय-"भवानीप्रसाद मिश्र का काव्यः गांधी जीवन दर्शन की उत्कट अभिव्यक्ति" में गांधी-विचार-दर्शन की उनकी रचनाओं के आधार पर चर्चा की जायेगी। छटे अध्याय "भवानीप्रसाद मिश्र का काव्यः शिल्पविधान" में उनकी काव्य भाषा तथा भाषागत विशेषताओं का, प्रतीक विधान, बिंब-विधान,छंद विधान का अध्ययन करेंगे। सातवे अध्याय 'भवानीप्रसाद मिश्र का काव्यः सगन्वित अनुशीलन' में पहले अध्याय से लेकर छटे अध्याय तक किये गये विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रा. डॉ. राजेंद्र शहा जी इस लघुशोध प्रबंध के निर्देशक हैं। आपके मौलिक मार्गदर्शन ने ही मुझे यह लघुशोध- प्रबंध लिखने और पूरा करने की प्रेरणा दी। आपने अपना अमूल्य वक्त देकर इस कृति को देखा और सुधारा हैं। आपके सुयोग्य पथप्रदर्शन के लिए मैं आपकी आभारी हूँ।

डॉ. गजाजन सुर्वेजी जिन्होंने अपना बहुमुल्य समय देकर मुझे विषय-चयन सामग्री संकलन के लिए मार्गदर्शन किया, उनकी मैं आभारी हूँ इसी प्रकार एल.बी.एस. कॉलेज. सातारा, मुधोजी महाविद्यालय फलटण के प्राचार्य विश्वासराव देशमुख, जयसिंगराव ढाणे, तथा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा

सभा, पुणे इसी प्रकार मेरे पति श्री. लालासो नाईक निंबाळकर, सौ. पद्मावती ब. नाईक निंबाळकर, श्री. बबनसो य.ना. निंबाळकर और मेरे माता पिता श्री. वामनराव कृ. घारगे, सौ. शालिनी वा.घारगे, जिन्होंने मुझे प्रोत्साहन देकर मेरा हौसला बढाया है, मैं उनकी आजन्म ऋणी हूँ। श्री. राजन घुमाळ और इस लघुशोध प्रबंध के टंकलेखन और सुयोग्य प्रस्तुती के लिए 'प्रितम एजन्सीज' सातारा ने जो कष्ट उठाये हैं, उनके प्रति भी मै आभार प्रगट करती हूँ।

श्री. भवानी प्रसाद मिश्र जी के साहित्य पर ज्यादातर शोध कार्य नहीं हुआ हैं। इस लघुशोध प्रबंध में विविध प्रयत्नों के बावजूद भी कुछ गलतियाँ हो जाना संभव है। मैं यह तो नही कह सकती की मेरी यह कृति निर्दोष है। फिर भी पाठकों को श्री. भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य-कला का परिचय देकर उसका रसास्वादन कराने में मुझे थोडीसी भी सफलता मिली तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगी।

शोध छात्र,
Gharge S.V.
(स्वाति वामनराव घारगे)

दिनांक 12/4/93